THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.48

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में डॉक्टर बी.आर. आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की उपादेयता

जयराम
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर उ0प्र0।

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों, उपनिषदों,रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन दर्शन और संत परंपरा की शिक्षाओं का संग्रह है। जिसमें मानव के लिए आदर्श एवं मूल्यों का पालन करते हुए नैतिकता एवं आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया गया है। डॉ बी.आर. आंबेडकर के विचारों एवं दर्शन में मानवाधिकारों की एक सशक्त झलक दिखाई देती है। डॉ बी आर आंबेडकर शिक्षा को केवल एक सूचना एवं नौकरी का साधन नहीं मानते थे बल्कि वे शिक्षा को शारीरिक विकास, मानसिक विकास,नैतिक विकास, और सामाजिक न्याय प्राप्त करने का एक हथियार मानते थे। वे शोषित, दलित, पिछड़े एवं महिलाओं के लिए सस्ती, अनिवार्य एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करते थे। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे छात्रवृत्ति, छात्रावास और आरक्षण जैसे उपायों पर भी जोर देते थे। डॉ आंबेडकर ने तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करने की बात कही है। जिस तरह से भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवीय पक्ष पर जोर दिया गया है उसी तरह डॉक्टर आंबेडकर ने शिक्षा को जीवन निर्माण और लोक कल्याण से जोड़ते हुए सभी के लिए समान अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था की बात रखी है। डॉ आंबेडकर ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहते थे कि लोग जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार से लड़ सकें और उसे हमेशा के लिए खत्म किया जा सके। वे चाहते थे कि हमारी शिक्षा व्यवस्था लोगों को निडर, जागरूक,संगठित और अपने हक एवं अधिकारों से लड़ने के लिए तैयार करे। वे धर्मनिरपेक्ष शिक्षा, तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के पक्षधर थे जिससे लोगों को समावेशी और आधुनिक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सके। डॉ आंबेडकर ने महिलाओं के विकास पर भी स्मरणीय कार्य किया उन्होंने कहा कि यदि किसी समाज की प्रगति देखनी हो तो यह देखें कि उस समाज की महिलाओं ने कितनी प्रगति की है। वे समाज के विकास का पैमाना महिलाओं के विकास को मानते थे ,उनका मानना था कि यदि एक पुरुष शिक्षित होता है तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है और एक महिला शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है उन्होंने महिलाओं के लिए हिंदू कोड बिल को संसद में पास करने का प्रयास किया जिसे बाद में महिलाओं को उत्तराधिकार,समान कार्य के लिए समान वेतन और कई विवाह अधिनियम महिलाओं की रक्षा और न्याय के लिए सामने आए हैं। अगर संक्षेप में कहा जाए तो डॉक्टर आंबेडकर ने भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष तक पहुंचने के लिए जो आधारभूत लोगों की आवश्यकताएं थी उन पर जोर दिया। उन्होंने भारतीय समाज में दलित पिछड़े एवं स्त्री समुदाय को अन्याय से बाहर निकालने के लिए एवं सम्मान की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया है जिससे वे स्वयं, समाज एवं देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे पाएं और नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास कर सकें। डॉ बी आर आंबेडकर समाज में समता, समानता,स्वतंत्रता, न्याय एवं बंधुत्व को स्थापित करना चाहते थे जो लोकतंत्र के आधार स्तंभ है मानवीय मूल्यों की बुनियाद हैं ऐसे में डॉ आंबेडकर के शैक्षिक विचार आज भी नितांत प्रासंगिक हैं।

की वर्ड्स - *भारतीय ज्ञान परंपरा, शैक्षिक विचार।*

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही भारत की समृद्ध, विविध एवं चिरंतन विकसित होने वाली ज्ञान परंपरा है। जो वेदों उपनिषदों विज्ञान दर्शन कला एवं साहित्य पर आधारित है यह व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का संगम है जो बौद्धिक विकास ही नहीं है बल्कि नैतिक,चारित्रिक एवं सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। इस परंपरा के मुख्य स्रोत वेद, उपनिषद, पुराण,रामायण,महाभारत, श्रीमद् भगवद् गीता, बौद्ध एवं जैन ग्रंथ हैं। इनमें आयुर्वेद, खगोल विज्ञान, गणित, योग,वास्तुकला,संगीत एवं दर्शन जैसे विषय शामिल है भारतीय ज्ञान परंपरा पर्यावरण के साथ संतुलन बनाकर रहने तथा सतत विकास को बढ़ावा देती है। यह प्राचीन भारतीय परंपरा के लक्ष्य सा विद्या या विमुक्तए अर्थात् विद्या वही है जो बंधनों से मुक्त करे जिससे आत्मा का विकास और ज्ञान की प्राप्ति हो। भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यावहारिक ज्ञान जो कृषि, ,धातु कला और पारंपरिक तकनीकें एवं कौशलों को जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं। यह भारत की संस्कृति को जीवंत रखती हैं। जो मनुष्य के शारीरिक,मानसिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को एक साथ लेकर चलती है। डॉ भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में महू (इंदौर के पास) मध्य प्रदेश में हुआ था। डॉ बी आर आंबेडकर ने दलितों, पिछड़ों एवं महिलाओं के उत्थान के लिए संघर्ष किया और उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने का भरपूर प्रयास किया। जिससे भारत में इन समूहों के जीवन स्तर में सुधार आया है डॉ बी आर आंबेडकर शिक्षा के महत्व से भली भांति परिचित थे। दरसल अछूत समझे वाली जाति में जन्म लेने के चलते उन्हें अपने स्कूली जीवन में अनेक अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ा था, उनका विश्वास था कि शिक्षा ही व्यक्ति में यह समझ विकसित कर सकती है कि वह अन्य से अलग नहीं है उसके भी अधिकार समान हैं। उन्होंने एक ऐसे राज्य निर्माण की बात रखी, जहां संपूर्ण समाज शिक्षित हो वे मानते थे कि शिक्षा ही व्यक्ति को अंधविश्वास,झूठ और आडंबर से दूर करती है। शिक्षा का उद्देश्य लोगों में नैतिकता एवं जनकल्याण की भावना विकसित करने का होना चाहिए। डॉक्टर बी आर आंबेडकर मानते थे कि बालक एवं बालिकाएं राष्ट्र की बुनियाद होते हैं सब प्रथम उनके शारीरिक विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए उनके शारीरिक विकास पर ही राष्ट्र की प्रगति और विकास निर्भर करता है जिस तरह से अरस्तु ने कहा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन का आनंद उठा सकता है और स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। हमारा देश लगभग 1000 साल तक दासता की जंजीर में जकड़े रहने के बाद आजाद हुआ इतनी लंबी दासता के बाद भारतीयों के मस्तिष्क का विकास नहीं हो पा रहा था उन्हें स्वतंत्र रूप से चिंतन विचार करने की शक्ति क्षमता नहीं रही थी परंतु लोकतंत्र की सफलता के लिए यह परम आवश्यक है कि व्यक्ति स्वतंत्र रूप से देश खेत में चिंतन मनन और विचार कर सके एवं निर्णय ले सके इसलिए आवश्यक है कि बालक एवं बालिकाओं के मानसिक विकास के लिए शिक्षा व्यवस्था को सक्षम होना चाहिए लेकिन ऐसा करने में भारत की शिक्षा व्यवस्था असफल प्रतीत हो रही है। किसी भी देश का विकास उसके नागरिकों के विकास पर निर्भर करता है। यदि उसके नागरिक योग्य एवं सुशिक्षित हैं,ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण हैं तभी वह देश के हित में कुछ कर पाएंगे। प्रतीक नागरिक के व्यक्तित्व के विकास का महत्व है प्रत्येक नागरिक भिन्न होता है लेकिन प्रत्येक नागरिक की विकास के लिए समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए पूर्ण व्यवस्थाओं में शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम होती है और इस पर नागरिक का विकास निर्भर करता है अगर शिक्षा बालको बालिकाओं की विकास के अनुकूल एवं सकारात्मक हुई तो उसे स्थिति में नागरिकों का समुचित विकास संभव हो पता है लेकिन आज भारत की शिक्षा व्यवस्था ऐसी प्रतीत नहीं हो रही है। यहां लोग आज भी जातिवाद,अस्पृश्यता और विभिन्न प्रकार के भेदभाव के शिकार बने हुए हैं। आज 78 वर्ष आजादी को पूरे हो चुके हैं फिर भी आज देश में रूढ़िवादिता एवं कुरीतियां खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। जब तक देश में यह रूढ़िवादी एवं लोगों को बांटने की सोच खत्म नहीं होती है तब तक व्यक्ति, समाज और देश का विकास होना असंभव प्रतीत होता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते प्रत्येक नागरिक को सामुदायिक जीवन रचित करने की कला प्रशिक्षण भी प्राप्त होना चाहिए यह कार्य भगवान बुद्ध की शिक्षा ही प्रदान करती है वह नागरिकों में परस्पर सहयोग, सद्भावना एवं सहिष्णुता का विकास करती है। डॉ आंबेडकर के द्वारा जी शिक्षा पद्धति की

कल्पना की गई थी यदि केंद्रीय सरकार और राज्य की सरकार हैं उनका अनुशीलन करती हैं तो भारत का प्रत्येक नागरिक आदर्श जीवन पा कई लन की कला का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेगा। सेक्टर बी आर आंबेडकर मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को लोकतांत्रिक नागरिकता का प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। प्रतीक नागरिक को इस युग बनाने की आवश्यकता है कि वह महत्वपूर्ण विषय में पश्चिम निर्णय ले सके स्वतंत्रता नहीं निकली स्वतंत्र एवं स्पष्ट चिंतन की आवश्यकता होती है लेकिन भारत के लोकतंत्र में ऐसा होना तंत्र असंभव प्रतीत होता है। क्योंकि आज की शिक्षा दिशाहीन दशन है जिससे आज भारत का लोकतंत्र भाई भतीजा तंत्र परिवार तंत्र भ्रष्टाचार तंत्र भेद तंत्र जातिवाद तंत्र और गुंडा तंत्र बदलता जा रहा है इसी से बचने के लिए परम आवश्यक नहीं बल्कि परिहार है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था में लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुकूल क्रांतिकारी परिवर्तन किए जाएं ऐसा किया जाना डॉक्टर आंबेडकर के द्वारा देखे गए स्वप्न की पूर्ति करके भारत के लोकतंत्र को आदर्श और सशक्त बनाया जा सकेगा।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

आंबेडकर बी. आर. (1945) डॉ आंबेडकर ने अपने ज्ञान को "व्हाट कांग्रेस एंड गांधी हेव डन टू द अनटचेबल्स" में गांधीजी द्वारा चलाए जा रहे दलित सुधार आंदोलन के समकक्ष लिखकर लोगों का ध्यान खींचा था। इसमें डॉक्टर आंबेडकर ने गांधी जी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन का विरोध किया, क्योंकि गांधी जी कोई ठोस कदम उठाए बगैर ही अनुसूचित जातियों में सुधार लाना चाहते थे, जबकि आंबेडकर अनुसूचित जातियों के हितों एवं उनके अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाकर उनको आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इसमें उन्होंने कांग्रेस तथा गांधी जी की दलित सुधार आंदोलन में किए गए कार्यों की नाकामी को बताया तथा कांग्रेस की अनुसूचित जातियों को दबाने की नीति पर भी सवाल उठाए।

कीर धनंजय (1962) ने अपनी पुस्तक "डॉ आंबेडकर लाइफ एंड मिशन" में लेखक ने डॉ आंबेडकर के जीवन एवं उनके कार्यों का वर्णन किया है। इसमें बताया गया है कि किस तरह से आंबेडकर ने एक अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति में जन्म लेकर उच्च जातियों के द्वारा किए गए अत्याचारों को सहन किया तथा उनके विरुद्ध आवाज उठाकर अनुसूचित जातियों में एकजुटता का संचार किया। इन्होंने अनुसूचित जातियों के अधिकारों को प्राप्त करने में दिन-रात एक कर दिया। अंत में उन सभी अधिकारों को प्राप्त करने में सफलता भी प्राप्त की।

मेहता चेतन (1991) द्वारा प्रकाशित पुस्तक "युग दृष्टा डॉक्टर बी. आर. आंबेडकर" में लेखक ने बाबा साहब के जन्म, शिक्षा, अनुसूचित जातियों के मसीहा, विधि शास्त्री, संविधान निर्माता, उनके धर्म परिवर्तन की अंतिम यात्रा एवं भारत रत्न प्राप्ति का वर्णन किया है।

लिमये मधु (1997) ने अपनी पुस्तक "बाबा साहब आंबेडकर एक चिंतन" में बाबा साहब आंबेडकर को एक सामाजिक क्रांतिकारी के रूप में दर्शाया है। इसमें बताया गया है कि समाज में उन्होंने अनुसूचित जातियों के उद्धार एवं अन्य प्रकार की सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए अथक प्रयास किया जिसमें काफी हद तक सफल रहे। इस पुस्तक में बाबा साहब एक जाति संस्था उन्मूलक, बाबा साहब व गांधी जी के विचार विमर्श के साथ-साथ उनकी भारत पाक संबंधी भूमिका, उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धर्म परिवर्तन संबंधी घटनाओं का वर्णन किया गया है।

रतु नानक चंद (2005) ने अपनी पुस्तक "बाबा साहब डॉक्टर आंबेडकर संस्मरण और स्मृतियों" में बाबा साहब के बचपन, शिक्षा, उनके द्वारा किए गए आंदोलनों और डॉक्टर बी. आर. आंबेडकर के साथ अपने अनुभव एवं स्मृतियों का वर्णन किया गया है।

बौद्ध शीलप्रिय (2008) ने अपनी पुस्तक "पूना पैक्ट क्यों किया और किसके लिए" में बाबा साहब डॉक्टर भीमराव आंबेडकर द्वारा अनुसूचित जातियों की मांग, पूना पैक्ट,गांधी जी द्वारा आमरण आंबेडकर अनशन व उसके बाद की स्थिति का बड़ा ही विस्तृत वर्णन किया है।

धर्मकीर्ति एवं दीक्षित सोना (2024) ने अपनी पुस्तक "महान शिक्षाविद: डॉक्टर बी. आंबेडकर" में उन्होंने मानव जीवन में शिक्षा का महत्व, डॉक्टर आंबेडकर और उनके शिक्षा सिद्धांत, डॉ बी आर आंबेडकर की शिक्षा दर्शन के साध्य, लोकतांत्रिक भारत में लोकतांत्रिक शिक्षा की व्यवस्था आदि पर विस्तृत चर्चा की है।

अध्ययन के उद्देश्य

1-भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करना।

2-डॉ बी.आर.आंबेडकर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

3- भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1-भारतीय ज्ञान परंपरा से क्या अभिप्राय है।

2- डॉ भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचारों से क्या तात्पर्य है।

3- भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता क्या है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ केवल प्राचीन ग्रंथो का अध्ययन नहीं है बल्कि ज्ञान के माध्यम से जीवन मूल्यों को स्थापित करना एवं चरित्र निर्माण करना है। भारतीय चिंतन में जीवन को केवल भोग का साधन न मानकर साधना का माध्यम माना गया है। इस तरह भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन मूल्यों की आधारशिला प्रस्तुत करती है भारतीय सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसकी गहन एवं व्यापक ज्ञान परंपरा है। इस परंपरा का लाभ मात्र वैदिक उन्नति ही नहीं बल्कि मनुष्य के चरित्र और आध्यात्मिक विकास का निर्माण करना है। भारतीय दृष्टिकोण में जीवन को भोग की वस्तु न मानकर आत्मोन्नति का साधन माना गया है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा के जीवन मूल्य आज भी उतने ही उपयोगी और आवश्यक हैं जितने प्राचीन काल में रहे हैं। यह मूल्य मनुष्य को एक आदर्श, संयमित और उद्देश्य पूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल भौतिक एवं लौकिक ज्ञान की प्राप्ति नहीं रहा है बल्कि मनुष्य को आत्मबोध,सत्य की खोज तथा जीवन में परम पुरुषार्थ की ओर उन्मुख करना है।

डॉ भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचार

डॉ भीमराव आंबेडकर का मानना था कि शिक्षा की व्यवस्था समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए होनी चाहिए चाहे वह किसी भी जाति, धर्म लिंग एवं समुदाय से आता हो। आंबेडकर मानते थे कि जब प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित होगा तभी देश का वास्तविक विकास संभव हो पाएगा। शिक्षा के द्वारा ही हम देश में योग्य नागरिक तैयार कर सकेंगे। शिक्षा के द्वारा ही बालकों का शारीरिक विकास,मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास एवं उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाता है। शिक्षा के द्वारा ही लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है, जिससे वह पाखंड एवं आडंबर की वास्तविकता को जान पाता है एवं उसे समाज से खत्म कर सकता है। शिक्षित लोग ही अपने अधिकारों और दायित्वों को अच्छे से समझ सकते हैं जिससे समाज और देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और देश में समानता,भाईचारा, न्याय एवं सामाजिक न्याय की सहायता से स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है। शिक्षा ही व्यक्ति को हर तरह के अन्याय से लड़ने की शक्ति देती है और और उसे एक वास्तविक मानव के रूप में जीने के लिए सहारा देती है।

डॉ भीमराव आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा एक विकसित एवं समृद्ध परंपरा है। जिसका उद्देश्य व्यक्ति के एक पक्ष का विकास करना नहीं है बल्कि उसके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक पक्ष का विकास करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य वेदों, उपनिषदों, पुराणों और प्राचीन ग्रंथो में निहित ज्ञान से परिचित कराना एवं उन्हें नई पीढ़ी में स्थानांतरित कर बालकों के सांस्कृतिक पक्ष का विकास करना है। शिक्षा के माध्यम से बालकों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति एवं सत्य, अहिंसा, दया, ईमानदारी आदि मूल्यों का विकास कर उनका चरित्र निर्माण करना है। बालकों के भौतिक पक्ष के विकास के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक पक्ष का भी विकास करना है। डॉ भीमराव आंबेडकर ने भारतीय ज्ञान परंपरा के मानवीय शिक्षा उद्देश्यों का समर्थन किया है

परंतु वैदिक युग में जो शूद्रों एवं स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति के अधिकार नहीं थे इन कुरीतियों का उन्होंने विरोध किया है। यदि वैदिक युग में शिक्षा सार्वभौमिक होती तो शूद्र एवं स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार होता, इस समय कुछ गिने-चुने उदाहरण अवश्य मिलते हैं परंतु सभी महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं थे लड़कियों के लिए वैदिक काल में किसी गुरुकुल की व्यवस्था नहीं थी। डॉ आंबेडकर कहते हैं कि शिक्षा ही सर्वोच्च है जिससे संपूर्ण मानव जाति का ही नहीं बल्कि मानव, समाज और देश का सर्वांगीण विकास होता है इसलिए उन्होंने सार्वभौमिक शिक्षा की वकालत की, जिससे देश में कहीं भी रह रहे किसी भी जाति, धर्म, लिंग का भेद किए बिना सभी को शिक्षा प्राप्त हो सके तभी देश का वास्तविक विकास हो पाएगा। डॉ आंबेडकर शिक्षा के द्वारा ही वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते थे जिसमें प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय और मानव अधिकारों के अनुकूल अपना जीवन निर्वाह करने के अवसर प्राप्त हो सकें। वे कहते थे ऐसे लोगों को शिक्षित करना आवश्यक है जो जाति प्रथा को बनाए रखना चाहते हैं यदि ऐसा नहीं हुआ तो भारत में लोकतंत्र का स्वरूप बेहतर नहीं हो बन पाएगा बल्कि लोकतंत्र को गहरे संकट में डाल देगा। आंबेडकर कहते हैं कि विद्यालयों में नैतिकता सीखने का तात्पर्य अनुशासनपूर्ण जीवन व्यतीत करना है। डॉ आंबेडकर विद्यालय एवं अन्य शिक्षण संस्थानों में अनुशासन को पालन करने के पक्षधर थे ,उन्होंने कहा हमारे पास शिक्षा विभाग है जिसका काम लोगों को नैतिकता सिखाना और उनको समाज में रहने लायक बनाना है। इस प्रकार आंबेडकर के अनुसार विद्यालय एवं शिक्षण संस्थान व्यक्ति, समाज एवं देश में अनुशासन एवं नैतिकता का पाठ सीखने सिखाने के उचित माध्यम हैं। लेकिन खेद की बात है कि देश में अनुशासनहीन व्यवस्था व्याप्त होने के कारण अनुशासन और नैतिकता धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है इसके परिणाम स्वरुप व्यक्ति,समाज और देश में भ्रष्टाचार,बलात्कार, हत्याएँ एवं चोरी डकैती आग की तरह फैल रहे हैं। आंबेडकर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य जातिवाद और अस्पृश्यता को समाप्त कर समानता की स्थापना करना होना चाहिए। वे शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक स्वभाव का विकास करना चाहते थे जिससे लोग अंधविश्वासों और पाखंडों को समझ सकें और इनका विरोध कर सकें। डॉ भीमराव आंबेडकर ने महिला शिक्षा व महिला सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उनका मानना था कि अगर किसी समाज की प्रगति देखनी है तो आप उस समाज की महिलाओं की प्रगति देखिए क्योंकि अगर महिलाओं की उन्नति होगी तभी विकास समुचित हो पाएगा तभी वह समाज विकास विकसित और उन्नतशील माना जाएगा। डॉ आंबेडकर ने महिलाओं की शिक्षा और उन्हें शोषण अन्याय से बचने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं जिसमें हिंदू कोड बिल को लेकर आना महिलाओं के विकास में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। डॉ आंबेडकर ने जनसंख्या शिक्षा तथा परिवार कल्याण को भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बताया है इसके साथ-साथ उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य शिक्षा, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के विकास पर भी जोर दिया है। अगर वर्तमान में डॉक्टर भीमराव आंबेडकर द्वारा बताए गए शिक्षा सिद्धांतों और उनके द्वारा बताए गए शिक्षा के उद्देश्यों को अमल में लेंगे तभी देश में योग्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तार्किक नागरिक तैयार हो सकेंगे। इन्हीं के द्वारा हम देश में फैले भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, भेदभाव एवं सभी प्रकार की असमानताओं को समाप्त कर सकेंगे ,हम अपने सभी संवैधानिक मूल्यों समता, समानता, बंधुत्व, धर्मनिरपेक्षता एवं न्याय की स्थापना कर पाएंगे। आंबेडकर के शिक्षा दर्शन के द्वारा ही हम देश में एक स्वस्थ लोकतंत्र की स्थापना कर पाएंगे। अतः वर्तमान में देश के वास्तविक विकास के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ ही डॉ भीमराव आंबेडकर के शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा सिद्धांतों की नितांत प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-आंबेडकर बी.आर.(1936). एनीहिलेशन आफ कास्ट नाव्याना पब्लिशिंग।

2-**आंबेडकर बी. आर.(1945).** व्हाट कांग्रेस और गांधी हैव डन टू द अनटचेबल्स. थैकर एंड कंपनी।

3-आंबेडकर बी. आर. (1946), शूद्र कौन थे?.थैकर एंड कंपनी।

4-आंबेडकर बी. आर. (1948) द अनटचेबल्स: हूं वेयर द एंड व्हाइ दे बिकेम अनटचेबल्स?. अमित बुक कंपनी।

5- आंबेडकर बी.आर.(1957). बुद्धा एंड हिज धम्मा. सिद्धार्थ कॉलेज पब्लिकेशंस।

6- कीर,धनंजय (1990). डॉ. आंबेडकर: लाइफ एंड मिशन. पापुलर प्रकाशन।

7-जाटवा, डी.आर.(1998). द फिलोसोफी आफ डा.बी.आर.आंबेडकर. रावत पब्लिकेशन।

8-ग्रोवर, वी. (1998). डॉ आंबेडकर: पॉलीटिकल थिंकर ऑफ़ मॉडर्न इंडिया. डीप एंड डीप पब्लिकेशंस।

9- धर्मकीर्ति एवं दीक्षित सोना (2024),'’महान शिक्षाविद् : डॉ बी .आर. आंबेडकर , सम्यक प्रकाशन 32/3,पश्चिमपुरी नई दिल्ली -110063.

Cite this Article:

जयराम. (2026). भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में डॉक्टर बी.आर.आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की उपादेयता. The Research Dialogue, 5(2), 452–457, Volume-05, Issue-02, July-2026. DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.48

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

जयराम

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में डॉक्टर बी.आर. आंबेडकर के शैक्षिक विचारों की उपादेयता

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.48